आप मुझे अहंकारी न समझना। मुझे आप सज्जनों से प्रेम है और आप सभी महापुरूषें को अपना गुरू मानकर मैने आपने कुछ विचार लिखे है। मेरा भाव किसी का मन दुखाने का नहीं है। काल कर्म के चक्क्र से महापुरूषों की गिरावट की जो बात मैंने अखबारों में पढी तो उन बातों का मेरे मन पर प्रभाव पडा। इसलिए मैने अपने गुरूओं को समझ–बूझ वाली बात बताने का यत्न किया है। पता नहीं मेरे यह विचार आप तक पहुंचे या न पहुंचे।

;मेरा मिशन मानवता धर्म यानी Religion of humanity है। सभी सम्प्रदायों के मनुष्य मेरे ही भाई है। पहले समय कुछ और था अब समय बदल गया है। पूरे विश्व की मानवता एक बडे नगर की तरह है और सबका परमात्मा एक ही है और आत्मा भी सबकी एक जैसी है। हमको मिलजुल कर खुशी से जीवन जीने की आवश्यकता है। विश्व के सब धर्म गुरूओं से यही अर्ज है कि सब इस मानवता धर्म मजहबे इन्सानियत या Religion of humanity में शामिल होकर पूरी मानवजाति यानी सभी सम्प्रदायों के मनुष्यों को आपना अनुभव बताएं और सबको ज्ञान दें। सभी मनुष्यों को आपके भाई है और एक ही परमात्मा के हम सब बच्चे हैं। सब धर्म गुरू एक होकार काम करें तब यह हमारी दुनिया स्वर्ग बन जायगी और धर्म के नाम पर लडाई–झगडें समाप्त हो जायेंगे। आज के वैाानिकों ने वस्तु के साथ प्रयोग करके संसार में कितनी उन्नति की है? फिर धर्म गुरू तो मन आत्मा परमात्मा के विषय में बहुत ऊंचा ज्ञानजानते हैं। क्या नहीं कर सकते?)

पूज्य महात्माओं। मनुष्य की सुरत परमात्मा का एक छोटा अंश है जो यहां खेल खेलने आई है। यह संसार एक तरह की नाटकशाला ही है। इस विषय में एक नीचे का शब्द पढें–

यह जग नाटकशाला साधो यह जग नाटकशाला।
राजा रेक फकीर औलिया. दृश्य विचित्र निराला।
कोई तो ओढे शाल दुशाला. काई सिर कम्बल काला।।
सुरत ने अद्भुत भेष बनाए. नाचे नाच रसाला।
बावे भाव दिखावे छिन्न. खेले खेल निराला।।

ब्रह्म वेद से रचा जगत को. विष्णु गदा ले पाला।
शिव संहार का साज सजावे. साथ भूत बेताला।।